मसिही पिटक की ये 10 कहानियाँ बौद्ध और ईसाई संस्कृतियों के बीच समझ लाने के लिए हैं। बुद्ध और जीसस की शिक्षाएँ बहुत समान हैं क्योंकि दोनों ही करुणा, दया और दूसरों के लाभ के लिए अपना जीवन देने पर ज़ोर देते हैं। यहाँ उन अवधारणाओं की सूची दी गई है जिनके कारण गलतफहमी हुई है।

1.स्वर्ग की अवधारणा। विनाश (अस्थायीता या स्थायित्व)

2. फिर से जन्म और स्वर्ग से जन्म की अवधारणा? बौद्ध लोग फिर से जन्म नहीं लेना चाहते। बुद्ध ने लोगों को पुनर्जन्म (संसार) के चक्र से बचने की शिक्षा दी

3. बलिदान और जीवन अर्पण?

4. न्याय और क्रोध?

5. नवीनीकरण (फिर जन्म) या पुनर्जन्म

6. कामुक प्रेम या करुणा

7. अपराध, बुरी इच्छा या पाप?

8. बुद्ध या क्राइस्ट की श्रेष्ठता? कौन बड़ा है?

9. योग्यता या अनुग्रह?

10. सृष्टि या शाश्वत अस्थायी निवास?

11. विश्वास या जो ज्ञात है उस पर भरोसा

12. ऐतिहासिक अभिलेखों पर आधारित कहानियाँ या मिथकों/कहानियों पर आधारित सिद्धांत।

"क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा **प्रेम** किया कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर **विश्वास** करे, वह नाश न हो, परन्तु **अनन्त जीवन** पाए।" यूहन्ना 3:16. अधिकांश पश्चिमी ईसाइयों द्वारा शुरुआती रविवार स्कूल में पढ़ाए जाने वाले इंजील ईसाइयों के इस प्रमुख बाइबिल शास्त्र का उद्देश्य शुरुआती ईसाई बच्चों की शिक्षा में बुनियादी बाइबिल अवधारणाओं को संप्रेषित करना है। हालाँकि बौद्ध इस शास्त्र को बहुत अलग तरीके से पढ़ते हैं। वे मोक्ष की शुभ समाचार नहीं सुनते, बल्कि परमेश्वर के कामुक प्रेम के बारे में सुनते हैं, जो मिथकों में विश्वास पर आधारित है जो पुनर्जन्म के चक्र की ओर ले जाता है जो नरक में नाश होने के समान है। बाइबिल के लेखकों द्वारा संप्रेषित किया जाने वाला पूरा अर्थ बौद्ध विश्वदृष्टि में उल्टा है। यूहन्ना 3:16 को शुभ समाचार के रूप में नहीं समझा जाता है, जिसे बाइबिल सुसमाचार कहती है, बल्कि बुरी खबर के रूप में समझा जाता है। बौद्धिष्ठ लोगों के कान के लिए इसका बेहतर अनुवाद हो सकता है, "क्योंकि परमेश्वर में इतनी महान करुणा थी कि उसने अपना एक और अद्वितीय पुत्र दान कर दिया ताकि जो कोई उस पर भरोसा करे, वह अनन्त नरक में

नाश न हो, बल्कि उसे स्थायी अनन्त जीवन मिले।" यूहन्ना 3:16, बर्मा (म्यांमार) से बाइबल के सम्मा पिटक अनुवाद से । सम्मा पिटक बर्मी बाइबल का पहला स्वदेशी अनुवाद है क्योंकि यह जडसन अनुवाद पर निर्भर नहीं करता है जिसे सभी 15 बर्मी अनुवाद प्राथमिक स्रोत के रूप में उपयोग करते हैं।

1. दुख का कारण और प्रभाव

पांच दिनों में धरती की धूल से ब्रह्मांड, दुनिया और हर जीवित चीज़ बनाने के बाद, छठे दिन परमेश्वर ने पहली शादी बनाई। उन्होंने पहले आदमी को आदम और पहली महिला को उन्होंने हव्वा कहा । उन्होंने इस परिवार को आज्ञा दी कि "फलदायी हो और बढ़ो और पृथ्वी में भर जाओ।" उन्होंने अदन नामक एक बगीचे में आदम और हव्वा के सभी ज़रूरतें पूरी कीं। इस बगीचे में कई फलदार पेड़ थे, जैसे जीवन का पेड़ और अच्छाई और बुराई के ज्ञान का पेड़। जीने के लिए मनुष्य को जानवरों को मारने की ज़रूरत नहीं थी। जानवरों की तरह, पहले आदमी और पहली महिला को कपड़ों की ज़रूरत नहीं थी, फिर भी वे शर्मिंदा नहीं थे। सृष्टिकर्ता परमेश्वर हर शाम आदम और हव्वा के साथ घूमने और उनसे दोस्तों की तरह बात करने के लिए नीचे आते थे ।

साँप सभी जानवरों में सबसे चतुर था (यह साँप वास्तव में दुष्ट था, शैतान-**मारा**)। एक दिन उसने हव्वा से कहा, "क्या यह सच है कि परमेश्वर तुम्हें बगीचे के सभी पेड़ों से खाने नहीं देंगे?"

"नहीं, हम सभी पेड़ों से खा सकते हैं। यानी, उस पेड़ को छोड़कर जिसे अच्छे और बुरे के ज्ञान का पेड़ कहा जाता है। परमेश्वर ने कहा कि हमें उस फल को खाना या छूना भी नहीं है। वह कहते हैं कि अगर हम ऐसा करेंगे, तो हम मर जाएँगे।"

"यह सच नहीं है! तुम नहीं मरोगे। परमेश्वर ने तुमसे कहा क्योंकि वह जानता है कि अगर तुम उस फल को खाओगे, तो तुम उसके समान हो जाओगे - तुम्हें **ज्ञान** मिलेगा।"

औरत ने फल को देखा। यह सुंदर और स्वादिष्ट लग रहा था। उसने सोचा, "अगर मैं यह फल खाऊँगी, तो यह मुझे **ज्ञान** देगा।" इसलिए, उसने फल लिया और उसे खा लिया। उसने फिर कुछ आदम को दिया और उसने भी उसे खा लिया। अचानक उन्हें एहसास हुआ कि वे नंगे थे। तुरंत उन्होंने अपनी शर्म को छिपाने के लिए कुछ पत्तियों को एक साथ सिल दिया।

जैसे ही शाम हुई, उन्होंने परमेश्वर को बगीचे में चलते हुए सुना। अचानक, उन्हें एहसास हुआ कि वे परमेश्वर से डरते हैं, इसलिए वे पेड़ों के बीच छिप गए।

"आदम, तुम कहाँ हो?"

आदम जानता था कि उसे जवाब देना होगा। उसने कहा, "हे प्रभु, मैंने आपको बगीचे में चलते हुए सुना, और मैं डर गया क्योंकि मैं नंगा था। इसलिए, मैं छिप गया।"

"किसने तुम्हें बताया कि तुम नंगी हो? क्या तुमने उस पेड़ से खाया जिससे खाने के लिए मैंने तुम्हें मना किया था?" "यह वह स्त्री थी जिसे तुमने मुझे दिया था। यह उसकी गलती है। उसने मुझे फल दिया, और हाँ, मैंने इसे खा लिया।"

परमेश्वर ने हव्वा की ओर रुख किया और कहा, "तुमने ऐसा क्यों किया?"

"यह साँप की गलती है! साँप ने मुझे धोखा देकर फल खाने के लिए मजबूर किया!"

परमेश्वर ने साँप की ओर रुख किया और कहा, "क्योंकि तुमने ऐसा किया है,तुम सभी जानवरों से ज़्यादा श्रापित हो। अब से तुम अपने पेट के बल पर चला करेगा। तुम्हारे और स्त्री के बीच दुश्मनी होगी, और तुम्हारी संतान और उसकी संतान के बीच लड़ाई होगी। वह तुम्हारा सिर कुचल देगा, जबकि तुम केवल उसकी एड़ी को डसोगे।"

स्त्री की ओर देखते हुए परमेश्वर ने कहा, "जब तुम बच्चों को जन्म दोगी तो तुम्हारा दर्द बहुत होगा, और बच्चे पैदा करना दर्द से जुड़ा होगा। तुम अपने पति को नियंत्रित करना चाहोगी, लेकिन अब से, पुरुष तुम पर प्रभुता करेगा और तुम पुरुष की इच्छा करोगी।"

परमेश्वर ने आदम से कहा, "मैंने यह स्पष्ट कर दिया था कि तुम्हें उस पेड़ से नहीं खाना था। क्योंकि तुमने अवज्ञा की है, इसलिए ज़मीन तुम्हारे कारण पीड़ित होगी। अब से, तुम अपने भोजन के लिए काम करोगे, और ज़मीन तुम्हारे खिलाफ़ लड़ेगी। यह कांटे और खरपतवार उगाएगी। कड़ी मेहनत और पसीना बहाकर की गई मेहनत आपके जीवन मे तब तक रहेंगे जब तक तुम उस मिट्टी में वापस नहीं लौट जाते जहाँ से तू आया हैं।"

परमेश्वर ने आदमी और उसकी पत्नी को जानवरों की खाल से बने कपड़े पहनाए। फिर उसने उन्हें बगीचे से बाहर भेज दिया, जहाँ वे अपने भोजन के लिए मिट्टी खोदते थे।

परमेश्वर ने बगीचे के बाहर एक संरक्षक **दुत** को रखा। उस दिन से, लोग जीवन के वृक्ष से अलग हो गए।

2. करुणा के परमेश्वर का जन्म

2021 साल पहले, बुद्ध के 563 साल बाद, इज़राइल देश में मैरी नाम की एक युवती के सामने एक **दूत** प्रकट हुए। इज़राइल दक्षिण-पश्चिमी एशिया में स्थित है, लेकिन उस समय रोमन साम्राज्य की क्रूर और दमनकारी सेना के अधीन था। मैरी की सगाई जोसेफ नाम के एक व्यक्ति से होने वाली थी। **दूत** ने उससे कहा, "मैरी, तुम पर परमेश्वर का आशीर्वाद है।" वह चौंक गई और उसे समझ में नहीं आया कि क्या कहे। "डरो मत। तुम्हें परमेश्वर का अनुग्रह प्राप्त हुआ है। तुम एक बेटे को जन्म दोगी और उसका नाम येशुआ रखोगी। वह महान होगा और उसके राज्य का कोई अंत नहीं होगा।" मैरी ने कहा, "यह कैसे सच हो सकता है? मैं एक कुंवारी हूँ।" **दूत** ने कहा "तुम्हारा जन्म सृष्टिकर्ता परमेश्वर की शक्ति से होगा, इसलिए उस बच्चे को परमेश्वर का पुत्र कहा जाएगा! यह बच्चा कोई साधारण बच्चा नहीं था और उसका खून पहली महिला, हव्वा से नहीं निकला था, बल्कि उसका जीवन निर्वाण नगर से था। **दूत** ने कहा, "मरियम, परमेश्वर के लिए सब कुछ संभव है।" "मरियम सहमत हो गई और झुककर बोली, "मैं प्रभु की दासी हूँ। जैसा तुमने कहा है वैसा ही हो।" जल्द ही यूसुफ, जिससे मरियम की सगाई हुई थी, को पता चला कि वह गर्भवती है। वह जानता था कि वह पिता नहीं है। फिर भी, वह एक धर्मी व्यक्ति था और उसे शर्मिंदा नहीं करना चाहता था। उसने चुपचाप सगाई तोड़ने का फैसला किया। वह इस बारे में गहराई से सोच रहा था जब एक **दूत** ने उसे सपने में दर्शन दिए। "जोसेफ, मरियम को अपनी पत्नी बनाने से मत डरो। वह जिस बच्चे को जन्म देगी वह परमेश्वर से है। जब वह पैदा होगा, तो तुम उसका नाम **"येशुआ"** रखना जिसका अर्थ है, **उद्धारकर्ता परमेश्वर**, क्योंकि वह लोगों को उनके **डुकारिटास** (पाप) से बचाएगा।" यूसुफ ने तुरंत मरियम को अपनी पत्नी बना लिया। उस समय रोमन सेना ने पूरे इसराइल को उनके पूर्वजों के गाँव में जाने के लिए मजबूर किया, यूसुफ और उसकी पत्नी को दूर बेथलेहम गाँव में जाने के लिए मजबूर किया गया, क्योंकि सेना परिवार की सूची गिनना चाहती थी।

यह यात्रा उस समय के करीब थी जब मरियम अपने बच्चे को जन्म देने वाली थी। यूसुफ और मरियम का बेथलेहम में कोई परिवार नहीं था। दुर्भाग्य से जब वे वहाँ पहुँचे तो सभी होटल भरे हुए थे, इसलिए यूसुफ ने उनके लिए एक अस्तबल में रात बिताने के लिए जगह ढूँढ़ी। उस रात, मरियम ने अपने बच्चे को जन्म दिया। उद्धारकर्ता का जन्म हुआ। मरियम ने बच्चे को कपड़े की पट्टियों में लपेटा, और उसे एक चारागाह में लिटा दिया। उसी रात, चरवाहे पास के एक खेत में अपने झुंड को देख रहे थे। अचानक एक **दूत** उनके साथ खड़ा हो गया, और आकाश चमकदार रोशनी से भर गया। चरवाहे डर गए, लेकिन **दूत** ने कहा, "डरो मत। मैं तुम्हें बहुत अच्छी खबर देने आया हूँ!" फिर उसने पास के शहर की ओर इशारा किया। "आज रात, उद्धारकर्ता का जन्म बेथलेहम में हुआ। वह मसीहा (मेट्रेया) है। वहाँ जाओ, और कपड़े की पट्टियों में लिपटे, चरनी में लेटे हुए एक बच्चे को देखो।" अचानक पूरा आकाश **दूत**ओं से भर गया जो परमेश्वर की स्तुति कर रहे थे और गा रहे थे, "सर्वोच्च परमेश्वर की जय हो! पृथ्वी पर उन लोगों को शांति मिले जो परमेश्वर को प्रसन्न करते हैं।" फिर, वे गायब हो गए। चरवाहों ने तुरंत वैसा ही किया जैसा उन्हें बताया गया था। वे बेथलेहम गए और मैरी, जोसेफ और बच्चे को पाया, जैसा कि **दूत** ने कहा था। उन्होंने उन्हें बताया कि उस रात क्या हुआ था, और हर कोई आश्चर्यचकित था। इसके बाद, वे अपने खेतों में वापस चले गए, उन्होंने जो कुछ देखा था उसके लिए परमेश्वर की स्तुति की।

पूर्वी एशिया के बुद्धिमान प्राध्यापक, शायद टैक्ससिला भारत से, आने वाले मेट्रेया के बारे में सुना और मसीहा (मेट्रेया) की तलाश में पश्चिम में इज़राइल आए। उन्होंने एक विशेष तारे का अनुसरण किया जो पृथ्वी से आया था। पूर्व की ओर जो उन्हें इज़राइल ले गया जहाँ येशुआ का जन्म हुआ। बुद्धिमान लोगों ने रोमन सेना के गवर्नर और उसके मंत्रियों से पूछा कि मसीहा किस गाँव में पैदा होगा। गवर्नर आने वाले उद्धारकर्ता से जलता था, क्योंकि इस उद्धारकर्ता के बारे में भविष्यवाणी की गई थी कि वह इज़राइल का राजा और दुनिया का राजा होगा। मसीहा और क्राइस्ट शब्द का अर्थ है "अभिषिक्त व्यक्ति।" उसने बच्चे को मारने के लिए सेना भेजी लेकिन एक दूत ने सपने में यूसुफ को अफ्रीका में पड़ोसी मिस्र में शरण लेने की चेतावनी दी। जब बुद्धिमान प्रोफेसरों ने येशुआ को पाया तो उन्होंने उसकी उपासना की, उन्हें सोना और दो धूप लोबान और गंधरस लाए।

3. यीशु करुणा सिखाते हैं

लूका 10:25-37

एक बार व्यवस्था का एक विशेषज्ञ यीशु की परीक्षा लेने के लिए खड़ा हुआ। उसने पूछा, "गुरु, अनन्त जीवन पाने के लिए मुझे क्या करना चाहिए?"

उसने उत्तर दिया, "व्यवस्था में क्या लिखा है?" "तुम इसे कैसे पढ़ते हो?"

उसने उत्तर दिया, "अपने प्रभु परमेश्वर के लिए अपने पूरे मन और अपनी पूरी आत्मा और अपनी पूरी शक्ति और अपनी पूरी बुद्धि से **मेटा**(प्रार्थना) करो; और 'अपने पड़ोसी के लिए अपने समान **करुणा** रखो।"

"तुमने सही उत्तर दिया है," यीशु ने उत्तर दिया। "ऐसा करो और तुम जीवित रहोगे।"

लेकिन वह खुद को सही ठहराना चाहता था, इसलिए उसने यीशु से पूछा, "और मेरा पड़ोसी कौन है?"

उत्तर में यीशु ने कहा: "एक व्यक्ति यरूशलेम से जेरिको जा रहा था, जब उस पर लुटेरों ने हमला किया। उन्होंने उसके कपड़े उतार दिए, उसे पीटा और उसे अधमरा छोड़कर चले गए। एक महायाजक उसी रास्ते से जा रहा था, और जब उसने उस व्यक्ति को देखा, तो वह दूसरी तरफ से चला गया। इसी तरह, एक धर्मगुरु, जब उस स्थान पर आया और उसे देखा, तो वह दूसरी तरफ से चला गया। लेकिन एक सामरी, यात्रा करते हुए, उस व्यक्ति के पास आया; और जब उसने उसे देखा, तो उसे उस पर दया **(मुदिता**) आई। (सामरी भी ऐसे ही थे, लेकिन इस्राएल के यहूदी उन्हें तुच्छ समझते थे)। वह उसके पास गया और उसके घावों पर तेल और दाखरस डालकर पट्टी बाँधी। फिर उसने उस व्यक्ति को अपने गधे पर बिठाया, उसे एक सराय में ले गया और उसकी देखभाल की। अगले दिन उसने दो सिक्के (दो दिन की मजदूरी के बराबर) निकाले और उन्हें सरायवाले को दे दिया। उसने कहा, 'उसकी देखभाल करो,' इससे अधिक जो कुछ तेरा खर्चा होगा, जब मैं लौटूँगा, तुझे चुका दूँगा।'"

"तुम्हारे विचार से इन तीनों में से कौन उस आदमी का पड़ोसी था जो लुटेरों के हाथों में पड़ गया था?"

व्यवस्था के विशेषज्ञ ने उत्तर दिया, "वह जिसके पास **मुदिता**(वह ख़ुशी जो दूसरों की भलाई में आनंदित होने से आती है) था।"

येशुआ ने उससे कहा, "जाओ और वैसा ही करो।"

4. येशुआ ने पुथुज्जन (पापियों) को पश्चाताप करने के लिए बुलाया। लूका 19:1-10

येशुआ यरीहो में प्रवेश करके वहाँ से गुज़र रहा था। वहाँ जक्कई नाम का एक आदमी था; वह एक चुंगी लेने वालों का सरदार था और धनी था। वह देखना चाहता था कि यीशु कौन है, लेकिन वह नाटा था इसलिए वह भीड़ के कारण कुछ नहीं देख सकता था। इसलिए वह आगे भागा और उसे देखने के लिए एक गूलर के पेड़ पर चढ़ गया, क्योंकि यीशु उसी तरफ़ से आ रहा था।

जब येशुआ उस स्थान पर पहुँचा, तो उसने ऊपर देखा और उससे कहा, "जक्कई, तुरंत नीचे आ जाओ। मुझे आज तुम्हारे घर पर अवश्य रहना है।" इसलिए वह तुरंत नीचे आया और प्रसन्नता के साथ उसका स्वागत किया।

सब लोगों ने यह देखा और बुदबुदाने लगे, "वह एक पुथुज्जन (पापी) के यहाँ मेहमान बनने गया है।"

लेकिन जक्कई ने खड़े होकर प्रभु से कहा, "देखिए प्रभु! मैं अभी अपनी आधी संपत्ति गरीबों को देता हूँ, और अगर मैंने किसी से कुछ भी ठगा है, तो मैं उसे चार गुना लौटा दूँगा।"

येशुआ ने उससे कहा, "आज इस घर में उद्धार आया है, क्योंकि यह व्यक्ति भी अब्राहम का पुत्र है।

क्योंकि मनुष्य का पुत्र खोए हुओं को ढूँढ़ने और उनका उद्धार करने आया है।"

5. बुराई पर येशुआ की शक्ति लूका 8:26-39

येशुआ और उसके शिष्यों की नाव किनारे पर एक ऐसी जगह के पास आई जहाँ एक दुष्टात्मा से ग्रस्त व्यक्ति कब्रों में रहता था। कोई भी उसे नियंत्रित करने के लिए सबल नहीं था। कई बार उन्होंने उस पर जंजीरें डालने की कोशिश की, लेकिन उसने उन्हें आसानी से तोड़ दिया। वह नंगा होकर पहाड़ियों पर घूमता था, और कब्रों में रहता था। वह रोता और चिल्लाता था, और खुद को पत्थरों से घायल करता था।

जब उसने येशुआ और उसके शिष्यों को नाव से उतरते देखा, तो वह दौड़ा और उसके सामने घुटने टेक दिए। उसने चिल्लाकर कहा, "मैं जानता हूँ तुम कौन हो। तुम येशुआ हो, परमप्रधान परमेश्वर के पुत्र! मुझे अकेला छोड़ दो। मुझे यातना मत दो।"

येशुआ ने कहा, "तुम्हारा नाम क्या है?" "हमें सेना कहा जाता है क्योंकि हम बहुत हैं। कृपया, हमें अगाध गर्त में मत भेजो। देखो, उस पहाड़ी पर सूअर हैं। हमें वहाँ भेज दो।" येशुआ ने सूअरों को देखा, और कहा, "हाँ, तुम वहाँ जा सकते हो।"

इसके साथ ही, दुष्टात्माएँ उस आदमी को छोड़कर सूअरों में प्रवेश कर गईं। सभी 2,000 सूअर पागल हो गए और पहाड़ी से नीचे और खड़ी ढलान से भाग गए। वे समुद्र में गिर गए और डूब गए। सूअरों की देखभाल करने वाले लोग शहर में भाग आए और लोगों को बताया कि क्या हुआ था। भीड़ खुद देखने के लिए बाहर आई। जब वे येशुआ के पास पहुँचे तो उन्होंने उस आदमी को देखा जो दुष्टात्मा से ग्रस्त था। वह चुपचाप बैठा था, पूरे कपड़े पहने हुए था और येशुआ की बातें सुन रहा था। फिर से, लोगों ने बताया कि क्या हुआ था। हर कोई डर गया, इसलिए उन्होंने येशुआ से जाने के लिए कहा।

जैसे ही वह नाव में चढ़ा, ठीक हो चुका आदमी बोला, "कृपया, क्या मैं आपके साथ चल सकता हूँ?" येशुआ ने उसकी ओर मुड़कर कहा, "अपने लोगों के पास वापस जाओ और उन्हें बताओ कि प्रभु ने तुम्हारे लिए कितना कुछ किया है। उन्हें अपने जीवन पर परमेश्वर की दया के बारे में बताओ।" इसलिए येशुआ और उसके शिष्य किनारे से चले गए और झील के यहूदी किनारे पर लौट आए। वह आदमी अपने गृहनगर गया और सभी को बताने लगा कि येशु ने उसके लिए क्या किया है। हर कोई हैरान था।

6. यीशु ने 5,000 लोगों को भोजन कराया यूहन्ना 6:1-15

इसके कुछ समय बाद, येशुआ गलील की झील के दूर किनारे पर गया, और लोगों की एक बड़ी भीड़ उसके पीछे हो ली क्योंकि उन्होंने बीमारों को ठीक करके उसके द्वारा किए गए चमत्कारों को देखा था। फिर यीशु एक पहाड़ पर चढ़ गया और अपने चेलों के साथ बैठ गया। यहूदीयों का फसह त्योहार निकट था।

जब येशुआ ने आँख उठाई और एक बड़ी भीड़ को अपनी ओर आते देखा, तो उसने फिलिप्पुस से कहा, "हम इन लोगों के खाने के लिए कहाँ से रोटी खरीदेंगे?" उसने यह केवल उसे परखने के लिए पूछा, क्योंकि वह पहले से ही मन में सोच रहा था कि वह क्या करने जा रहा है।

फिलिप्पुस ने उसे उत्तर दिया, "हर एक के लिए एक निवाला खरीदने के लिए आधे साल की मजदूरी से भी अधिक की आवश्यकता होगी!"

उसके एक और शिष्य साइमन पीटर का भाई अन्द्रियास बोला, "यहाँ एक छोटे लड़के के पास पाँच जौ की रोटियाँ और दो मछलियाँ हैं पर इतने सारे लोगों में इतने से क्या होगा?"

येशुआ ने कहा, "लोगों को बैठाओ।" उस स्थान पर अच्छी खासी घास थी इसलिये लोग वहाँ बैठ गये। ये लोग लगभग पाँच हजार पुरुष थे। फिर यीशु ने रोटियाँ लीं और धन्यवाद देने के बाद जो वहाँ बैठे थे उनको जितनी वे चाहते थे परोस दीं। इसी तरह उतनी मछलियाँ भी उन्हें दे दीं।

जब सबने भरपेट खा लिया, तो उसने अपने चेलों से कहा, "जो टुकड़े बचे हैं, उन्हें इकट्ठा कर लो। कुछ भी बरबाद न हो।" इसलिए उन्होंने उन्हें इकट्ठा किया और खानेवालों से बची हुई पाँच जौ की रोटियों के टुकड़ों से बारह टोकरियाँ भरीं।

जब लोगों ने येशुआ के किए गए चमत्कार को देखा, तो वे कहने लगे, "निश्चित रूप से यह पैगंबर (**मेत्रेय**) है जो दुनिया में आने वाला है।" येशुआ ने यह जानकर कि वे लोग आने वाले हैं और उसे बलपूर्वक राजा बनाना चाहते हैं, फिर से अकेले एक पहाड़ पर चले गए।

7. **येशुआ का क्रूस पर चढ़ना** **लूका 23:1-56**

येशुआ ने भविष्यवाणी की थी कि उसे धोखा दिया जाएगा, यहूदी और रोमन सेना द्वारा गिरफ्तार किया जाएगा, सूली पर चढ़ाया जाएगा और तीन दिन बाद उसे जीवित कर दिया जाएगा। उसने कहा कि उसकी मृत्यु कोई दुर्घटना नहीं होगी और यह दुनिया के पापों की क्षमा के लिए परमेश्वर की योजना थी और ठीक वैसा ही हुआ। उसके शिष्य यहूदा ने पैसे के लिए येशुआ को धोखा दिया और उसके खिलाफ मुखबिर के रूप में काम किया और यहूदी अदालत ने येशुआ को यह दावा करने के लिए मौत की सज़ा सुनाई कि वह मसीहा, एक राजा था। उन्होंने येशुआ पर झूठा आरोप लगाया कि उसने लोगों को रोमन राजा को कर न देने की शिक्षा दी थी। फिर येशुआ को दो चोरों के साथ सूली पर लटकाकर मौत की सज़ा देने के लिए सेना को सौंप दिया गया। सेना के सैनिकों ने धातु के टुकड़ों से बने कोड़े से येशुआ को प्रताड़ित किया, उसे 39 बार मारा। उन्होंने उसे नंगा किया, पीटा और उसका मज़ाक उड़ाया, उसके हाथ और पैर लकड़ी के क्रूस पर ठोंक दिए। वह 6 घंटे तक क्रूस पर लटका रहा और उसने परमेश्वर से उसे मारने वालों को माफ़ करने के लिए कहा।

येशुआ ने तब ऊँची आवाज़ में पुकारा, "हे पिता, मैं अपनी आत्मा तेरे हाथों में सौंपता हूँ।" यह कहते हुए उसने प्राण त्याग दिए।

सेनापति ने जो कुछ हुआ था, उसे देखकर परमेश्वर की स्तुति की और कहा, "निश्चय ही यह एक धर्मी व्यक्ति था।" जब वहाँ देखने आये एकत्र लोगों ने, जो कुछ हुआ था, उसे देखा तो वे अपनी छाती पीटते लौट गये। किन्तु वे सभी जो उसे जानते थे, उन स्त्रियों समेत, जो गलील से उसके पीछे पीछे आ रहीं थीं, इन बातों को देखने कुछ दूरी पर खड़े थे।

वहाँ यूसुफ नाम का एक व्यक्ति था, जो महासभा का सदस्य था, एक अच्छा और धर्मी आदमी था, जिसने उनके निर्णय और कार्य से सहमति नहीं जताई थी। वह अरिमतियाह गाँव से आया था, और वह स्वयं परमेश्वर के राज्य की बाट जोहनेवाला था। उसने पिलातुस के पास जाकर येशुआ के शव मांग ली। फिर उसने उसे नीचे उतारा, उसे सन के उत्तम रेश्मों के बने कपड़े में लपेटा और उसे चट्टान में काटे गए कब्र में रख दिया, जिसमें अभी तक किसी को नहीं रखा गया था। वह आगामी छुट्टी के लिए तैयारी का दिन था और **उपोसथा** (सब्त) शुरू होने वाला था।

जो स्त्रियाँ येशुआ के साथ गलील से आई थीं, वे यूसुफ के पीछे गईं और कब्र को देखा और देखा कि उसका शरीर कैसे उसमें रखा गया था। फिर वे घर गए और सुगंधित सामग्री और इत्र तैयार किए।

8. पुनरुत्थान लूका 24:1-8

सप्ताह के पहले दिन बहुत सवेरे सुगंधित सामग्री जो उन्होंने तैयार की थीं, लेकर कब्र पर गईं। उन्होंने पाया कि कब्र से पत्थर लुढ़का हुआ है, लेकिन जब वे अंदर गईं, तो उन्हें प्रभु येशुआ का शरीर नहीं मिला। जब वे इस बारे में सोच रही थीं, तो अचानक बिजली की तरह चमकने वाले कपड़े पहने दो आदमी उनके पास खड़े हो गए। डर के मारे स्त्रियाँ अपना मुँह ज़मीन पर टिकाकर झुक गईं, लेकिन पुरुषों ने उनसे कहा, "तुम जीवित को मरे हुओं में क्यों ढूँढ़ती हो? वह यहाँ नहीं है; वह जी उठा है! याद करो कि जब वह अभी भी तुम्हारे साथ गलील में था, तो उसने तुमसे क्या कहा था: 'मनुष्य के पुत्र को **पुथुज्जना (पापियों)** के हाथों में सौंप दिया जाना निश्चित है, क्रूस पर चढ़ाया जायेगा और तीसरे दिन फिर से जी उठना निश्चित है।" तब उन्हें उसके शब्द याद आए।

यीशु अपने शिष्यों के बीच प्रकट हुए और कहा, "तुम्हें शालोम (शांति) मिले।" वे चौंक गए और डर गए, उन्हें लगा कि उन्होंने भूत देख लिया है। उसने उनसे कहा, "डरो मत, मेरे हाथ और पैर देखो। यह मैं हूँ, मुझे छूओ और देखो,

भूत के पास मांस और हड्डियाँ नहीं होतीं, जैसा कि तुम देखते हो कि मेरे पास है। येशुआ ने उनसे पूछा, क्या तुम्हारे पास खाने के लिए कुछ है? उन्होंने उसे भुनी हुई मछली दी, और उसने उनके सामने ही उसे खाया। जब वह उनके साथ था, तो उसने उन्हें याद दिलाया कि उसने उनसे कहा था कि उसे मार दिया जाना चाहिए और **निर्वाण के शहर** में उनके लिए जगह तैयार करने से पहले उसे जीवित किया जाएगा।

9. येशुआ **निर्वाण नगर में जाते है और शिष्यों को सभी राष्ट्रों में जाने का आदेश देता है** मत्ती 28:16-20, प्रेरितों के काम 1:11

शिष्य गलील में उस पहाड़ पर गए जहाँ येशुआ ने उन्हें सबसे पहले चुना था। वह अचानक प्रकट हुआ और उन्होंने उसकी आराधना की। उसने कहा, "सारा अधिकार मुझे दिया गया है, इसलिए तुम सभी जातीय-राष्ट्रों में जाओ और चेला बनाओ। उन्हें पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम पर पानी में डुबोओ। उन्हें मेरी सभी आज्ञाओं का पालन करना सिखाओ। याद रखो, मैं हमेशा तुम्हारे साथ हूँ।"

मृतकों में से जी उठने के बाद येशुआ 40 दिनों तक धरती पर रहे। उन्होंने अपने शिष्यों के साथ समय बिताया, उन्हें परमेश्वर के राज्य के बारे में बातें सिखाईं। वह कई अन्य लोगों को, एक बार 500 से अधिक लोगों की भीड़ के सामने भी दिखाई दिए ।

फिर वह अपने शिष्यों को जैतून के पहाड़ पर ले गया। उसने कहा, "जब तक पिता से प्रतिज्ञा न मिल जाए, तब तक यरूशलेम मत छोड़ो। यूहन्ना ने पानी में डुबकी लगाई, लेकिन अब तुम पवित्र आत्मा में डुबकी लगाओगे।"

यीशु के शिष्यों ने देखा कि वह **निर्वाण नगर** में चढ़ रहा है। अचानक दो देव प्रकट हुए और उनसे पूछा, "तुम आकाश की ओर क्यों देख रहे हो? यही येशुआ जो तुमसे दूर ले जाया गया था, उसी तरह वापस आएगा जिस तरह तुमने उसे ऊपर जाते देखा था।

10. येशुआ निर्वाण नगर का राजा है

प्रकाशित वाक्य 21:9-22:2

एक **दूत** ने येशुआ के शिष्य यूहन्ना से कहा "आओ, और वह मुझे आत्मा में एक बड़े और ऊँचे पहाड़ पर ले गया, और मुझे पवित्र नगर यरूशलेम दिखाया, जो परमेश्वर के ओर से **निर्वाण** से नीचे उतर रही थी। परमेश्वर की महिमा उस में थी, ओर उस की ज्योति बहुत ही बहुमूल्य पत्थर, अर्थात बिल्लौर के समान यशब की नाईं चमक रही थी। और उस की शहरपनाह बड़ी ऊंची थी, और उसके बारह फाटक और फाटकों पर बारह **दूत** थे; और उन पर इस्त्राएलियों के बारह गोत्रों के नाम लिखे थे। इनमें से तीन फाटक पूर्व की ओर थे, तीन फाटक उत्तर की ओर, तीन फाटक दक्षिण की ओर, और तीन फाटक पश्चिम की ओर थे। जिस देव ने मुझसे बात की, उसके पास शहर, उसके फाटक और उसकी दीवारों को मापने के लिए सोने की एक मापने वाली छड़ी थी। शहर एक वर्ग की तरह बना हुआ था, जितना चौड़ा था उतना ही लंबा था। उसने छड़ से शहर को मापा और पाया कि इसकी लंबाई 1,500 मील थी,

और उतनी ही चौड़ाई थी और जितना लंबा है उतना ऊंचा था। शहर की बड़ी सड़क सोने की थी, पारदर्शी कांच की तरह शुद्ध... शहर को सूरज या चाँद की रोशनी की ज़रूरत नहीं था, क्योंकि परमेश्वर की महिमा इसे रोशनी देती है, और मेमना इसका दीपक है। राष्ट्र इसके प्रकाश में चलेंगे, और पृथ्वी के राजा अपना वैभव इसमें लाएँगे। किसी दिन इसके द्वार कभी बंद नहीं होंगे, क्योंकि वहाँ कोई रात नहीं होगी। राष्ट्रों की महिमा और सम्मान इसमें लाया जाएगा। कोई भी अशुद्ध चीज़ इसमें कभी प्रवेश नहीं करेगी, न ही कोई ऐसा व्यक्ति जो शर्मनाक या धोखेबाज़ काम करता है, बल्कि केवल वे लोग जिनके नाम मेमने की जीवन की पुस्तक में लिखे गए हैं।

येशुआ हर आँसू पोंछ देगा और फिर कोई मौत या बीमारी या पीड़ा नहीं होगी।

फिर मैं ने लोगों की एक ऐसी बड़ी भीड़ देखी, जिसे कोई गिन नहीं सकता था, और वे ऊंचे शब्द से यह नया गीत गा रहे थे, कि "तू योग्य है, क्योंकि तू ने अपने लोहू से हर एक कुल, और भाषा, और लोग, और जाति में से परमेश्वर के लिये लोगों को मोल लिया है। और उन्हें याजकों और राजाओं का राज्य बनाया है।" प्रकाशितवाक्य 5:9-10.

फिर **दूत** ने मुझे जीवन के जल की नदी दिखाई जो स्फटिक की तरह साफ थी, जो परमेश्वर और मेमने के सिंहासन से शहर की बड़ी सड़क के बीच से बह रही थी। आत्मा ने कहा, "आओ! जो प्यासा है वह आए; और जो चाहे वह जीवन के जल का मुफ्त उपहार ले। नदी के दोनों किनारों पर जीवन का पेड़ खड़ा था, जिसमें बारह फसलें फल देती थीं, जो हर महीने अपना फल देती थीं और पेड़ की पत्तियाँ राष्ट्रों के चंगाई के लिए थीं।